कीर्त्तन-घोषा : परिचय एवं अनुवाद रीति

'कीर्त्तन-घोषा' असम के प्रसिद्ध कवि महापुरुष शंकरदेव की अनन्य रचना है। यह रचना शंकरदेव की काव्य-प्रतिभा का श्रेष्ठ निदर्शन है। नवधा भक्ति में से शंकरदेव ने श्रवण और कीर्त्तन को प्रधान माना है। भगवंत के नाम या लीला को जब गाया जाता है, उसे कीर्त्तन कहते हैं। शंकरदेव ने 'कीर्त्तन-घोषा' के खंडों की रचना की थी; पर उनके संग्रह और संस्थापन का भार अपने प्रिय शिष्य माधवदेव को दिया था। शंकरदेव की मृत्यु के बाद माधवदेव ने संग्रह का यह काम भाँजे रामचरण ठाकुर को सौंपा था। माधवदेव की आज्ञा के अनुसार रामचरण ठाकुर ने ऊपरी और निचले असम के अनेक स्थलों का भ्रमण कर कीर्त्तन के खंडों का संग्रह कर 'कीर्त्तन-घोषा' के संकलन का काम सम्पूर्ण किया था। 'कीर्त्तन-घोषा' 30 खंडों की समष्टि है। इनमें से 28 खंड शंकरदेव द्वारा रचित हैं। शंकरदेव द्वारा रचित 'रुक्मिणीर प्रेम-कलह' और 'भृगु-परीक्षा' 'कीर्त्तन-घोषा; के अंतर्गत नहीं माने जाते। इसके विपरीत रत्नाकर कंदलि का 'सहस्र-नाम-बृत्तांत' को इस ग्रंथ में शामिल किया गया है। इस तरह मूल 'कीर्त्तन-घोषा' में 26 खंड मिलते हैं। वे हैं-

क्रमिक संख्या	**खंडों के नाम**	**कीर्त्तनों की संख्या**
1	चतुर्ब्बिंशति-अवतार-बर्णन	4
2	नाम-अपराध	2
3	पाषंड-मर्द्दन	4
4	ध्यान-बर्णन	2
5	अजमीलोपाख्यान	4
6	प्रह्लाद-चरित्र	22
7	गजेन्द्रोपाख्यान	3
8	हर-मोहन	10
9	बलि-छलन	5
10	शिशु-लीला कालि-दमन अनुखंड	11

11/1	रास-क्रीड़ा	
11/2	कंस-बध	33
12	गोपी-उद्धवर-संबाद	1
13	कूँजीर बाँचा-पूरण	1
14	अक्रूरर बाँचा-पूरण	1
15/1	जरासंधर युद्ध	
15/2	कालयवन बध	9
15/3	मुचुकुंद स्तुति	
	द्वारका-लीला	
16	स्यमंतक हरण	9
17	नारदर कृष्ण-दर्शन	5
18	बिप्र-पुत्र आनयन	4
19	दामोदर बिप्राख्यान	4
20	दैवकीर पुत्र आनयन	3
21	बेद स्तुति	3
22	कृष्ण-लीला-माला	7
23	श्रीकृष्णर बैकुंठ प्रयाण	19
	अर्ज्जुन-युधिष्ठिर-संबाद अनुखंड	
	उद्धव-बिलाप अनुखंड	
24	सहस्र-नाम-बृत्तांत	6
25	उरेषा-बर्णन	21
26	भागवतर तात्पर्य्य	2

NEGLIMPSE.COM

इनके अतिरिक्त 'कीर्त्तन-घोषा' के परिशिष्ट में 4 खंड संकलित संकलित किये गये हैं। ये चार खंड हैं- श्रीधर कंदलि की 'घुनुचा-यात्रा', माधवदेव का 'ध्यान बर्णन' शंकरदेव द्वारा रचित 'रुक्मिणीर प्रेम-कलह' और 'भृगु-परीक्षा'। इस तरह परिशिष्ट की स्थिति है-

क्रमिक संख्या	**खंडों के नाम**	**कीर्त्तनों की संख्या**
1	घुनुचा-कीर्त्तन	7
2	ध्यान-बर्णन (माधवदेव)	1
3	रुक्मिणीर प्रेम-कलह	4
4	भृगु-परीक्षा	1

'कीर्त्तन-घोषा' असम के वैष्णव धर्म का एक प्रमुख का मूल ग्रंथ है, शंकरदेव की साहित्यिक प्रतिभा का कीर्तिस्तंभ है। उत्तर भारत में 'रामचरितमानस' की तरह ही असम में 'कीर्त्तन-घोषा' अत्यंत लोकप्रिय है, वह असम के आम लोगों के गले का हार है। संक्षेप में एक-एक घटना की रचना में शंकरदेव सफल हुए हैं। कीर्त्तन के लिए उपयोगी पदों के समन्वय से 'कीर्त्तन-घोषा' की रचना हुई है। शंकरदेव ने 'नाम-अपराध',' पाषंड-मर्द्दन' और 'उरेषा-बर्णन' के विषय पद्मपुराण,बृहन्नारदीय पुराण और ब्रह्मपुराण से लिये हैं। बाकी खंडों का आधार भागवत है। शंकरदेव ने पुराणों की जिन कहानियों को ग्रहण किया है, उनके अनुवाद के साथ उन्होंने उनका काव्य और नाट्यारूपांतरण भी किया है। शंकरदेव ने उनके 'दशम' में रासक्रीड़ा का मनोरम अनुवाद किया है। साथ ही 'कीर्त्तन-घोषा' और 'केलिगोपाल' नाट में रासक्रीड़ा को नया रूप दिया है। रुक्मिणी हरण की कथा के आधार पर आपने 'रुक्मिणी हरण काव्य' एवं 'रुक्मिणी हरण नाट' की रचना की। 'अजमीलोपाख्यान','गजेन्द्रोपाख्यान' और 'बलि-छलन' की कहानियों को काव्य रूप दिये जाने के साथ 'कीर्त्तन-घोषा' में भी उनकी अंतर्भुक्ति हुई है।

वर्तमान 'कीर्त्तन-घोषा' के अनेक संकलित रूप मिलते हैं। प्रस्तुत अनुवाद कर्म महेश्वर नेओग द्वारा संपादित 'कीर्त्तन-घोषा आरु नाम घोषा' शीर्षक ग्रंथ को आधार माना गया है।

हिन्दी भाषा में अब तक असमीया की इस अमर रचना का किसी तरह का अनुवाद नहीं हुआ है। अतः यह अनुवाद 'कीर्त्तन-घोषा' का पहला हिन्दी अनुवाद होगा। अनुवाद करते समय कीर्त्तन-घोषा के पदों का पहले लिप्यंतरण किया गया है और फिर पदों के अर्थ रखे गये हैं। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा सुरक्षित रहेगी। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के '','च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण प्रयुक्त हैं-एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है।

रीतामणि वैश्य

गुवाहाटी विश्वविद्यालय

2.7.2021

NEGLIMPSE.COM